1977G House-holder's Concerns

Shravak Dharm (In Karuna Deep, 1977)

Earlier parts are missing

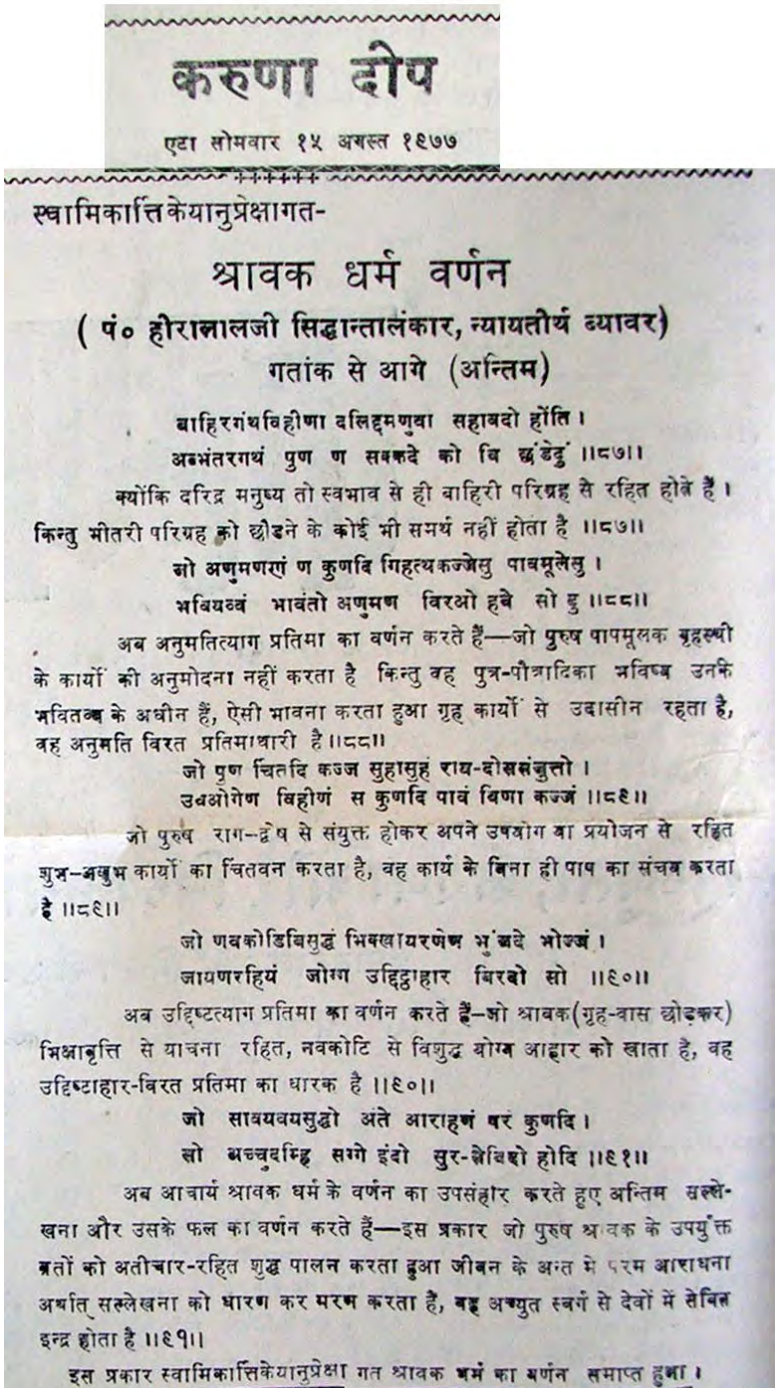

करुणा दीप

एटा सोमवार १५ अगस्त १९७७

स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षागत-

श्रावक धर्म वर्णन

(पं० हीरालालजी सिद्धान्तालंकार, न्यायतीर्थ व्यावर)

गतांक से आगे (अन्तिम)

बाहिरगंथविहीणा दलिद्दमणुवा सहावदो होंति ।
अब्भंतरगंथं पुण ण सक्कदे को वि छंडेदुं ॥८७॥

क्योंकि दरिद्र मनुष्य तो स्वभाव से ही बाहिरी परिग्रह से रहित होते हैं। किन्तु भीतरी परिग्रह को छोड़ने के कोई भी समर्थ नहीं होता है ॥८७॥

जो अणुमणणं ण कुणदि गिहत्थकज्जेसु पावमूलेसु ।
भवियव्वं भावंतो अणुमण विरओ हवे सो दु ॥८८॥

अब अनुमतित्याग प्रतिमा का वर्णन करते हैं—जो पुरुष पापमूलक गृहस्थी के कार्यों की अनुमोदना नहीं करता है किन्तु वह पुत्र-पौत्रादिका भविष्य उनकि भवितव्य के अधीन हैं, ऐसी भावना करता हुआ गृह कार्यों से उदासीन रहता है, वह अनुमति विरत प्रतिमाधारी है ॥८८॥

जो पुण चिंतदि कज्ज सुहासुहं राय-दोससंजुत्तो ।
उवओगेण विहीणं स कुणदि पावं विणा कज्जं ॥८९॥

जो पुरुष राग-द्वेष से संयुक्त होकर अपने उपयोग वा प्रयोजन से रहित शुभ-अशुभ कार्यों का चिंतवन करता है, वह कार्य के बिना ही पाप का संचय करता है ॥८९॥

जो णवकोडिविसुद्धं भिक्खायरणेण भुंजदे भोज्जं ।
जायणरहियं जोग्ग उद्दिट्ठाहार विरदो सो ॥९०॥

अब उद्दिष्टत्याग प्रतिमा का वर्णन करते हैं—जो श्रावक(गृह-वास छोड़कर) भिक्षावृत्ति से याचना रहित, नवकोटि से विशुद्ध योग्य आहार को खाता है, वह उद्दिष्टाहार-विरत प्रतिमा का धारक है ॥९०॥

जो सावयवयसुद्धो अंते आराहणं वरं कुणदि ।
सो अच्चुदम्हि सग्गे इंदो सुर-सेविदो होदि ॥९१॥

अब आचार्य श्रावक धर्म के वर्णन का उपसंहार करते हुए अन्तिम सल्लेखना और उसके फल का वर्णन करते हैं—इस प्रकार जो पुरुष श्रावक के उपर्युक्त व्रतों को अतीचार-रहित शुद्ध पालन करता हुआ जीवन के अन्त मे परम आराधना अर्थात् सल्लेखना को धारण कर मरण करता है, वह अच्युत स्वर्ग से देवों में सेवित इन्द्र होता है ॥९१॥

इस प्रकार स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा गत श्रावक धर्म का वर्णन समाप्त हुआ।